

१ व.पू. ॐ नमः श्रीगणेशाय ॥ ॥ अथ वरालापूजा विधिः ॥ यंत्रं लिखत ॥ विंदु त्रिको
 लसदकोल्य. मस्तु नैवा दशा करी. हस्त उच चतु रसं. नखा उच मसे न्वितं माच
 तु वीर स मायूकं. यन्तु गात्रं प्र पूजयेत् ॥ ॥ यन्तु हवस्य उच योः पोरु
 दीप नत्वा. पूजा दशा लि दक्षिण ला गति धाय. सवा मना गति कोल्य
 क्षाल हस्त चतु रसं मनु ली कृत्वा. मस्तु मूडया संको घ. भा चयेत् ॥ तन्म
 पुनः सतं गत पूजयेत् ॥ गंध पूज्या नि. धनू या नि मूडां दर्मयेत् ॥ गद पति प्रधा
 नैक लक्ष्मि स्थपय गन्ध पूजयेत् ॥ धनू या नि मूडां दर्मयेत् ॥ अका १

२ व.पू. गदिंशु का गान् अरु लो मन विला म वज पिन्वा. वन मूल मं कु ली ति वा
 न. अमृत ग्वरी गुरु क्का पवि मा च नी मं कु ल्य. ति वा नं ज पे ॥ कु ल लक्ष्मि
 वा ॥ ॐ त्रे कीं श्री अमृत अमृत का दा व अमृत ग्वरी अमृत वा सि ली
 अमृतं आवय २ सां सां सां सां अमृत ग्वयति मः स्वाहा ॥ गुरु क्का
 यवि मा च नाय गदि निः द्वि प्य. भा चयेत् ॥ गंध पूज्या त्यां सं पू जयेत्. ध
 नू या नि मूडां दर्मयेत् ॥ ॥ अग्नि. सा म. सूर्य कलां पूजयेत् ॥ ॐ नै ॥ गान
 कीं श्री धूम्राये ॥ ॐ उष्मा ये ॥ ॐ क्षालि न्ये ॥ ॐ क्षालि न्ये ॥ ॐ वि २

३
व.पू

हृदि तिं गि ज्ये २॥ ॐ श्री गुरु पा ये २॥ ॐ सूर्य पा ये २॥ ॐ संप्रवाह ना ये २॥ ॐ
कल्याण वाह ना ये २॥ ॐ कपिला ये २॥ ॥ नृत्त कला अग्नि ज्ये २॥ नृत्त कला
वृत्त वृत्ता ॥ ॥ अथ सूर्य कला पूजय ॥ ॐ नृत्त कला अग्नि ज्ये २॥ ॐ ग
पि ज्ये २॥ ॐ धूम्रा ये २॥ ॐ मनी ज्ये २॥ ॐ दालि ज्ये २॥ ॐ नृत्त ज्ये २॥ ॐ
सूर्य ज्ये २॥ ॐ कागदा ये २॥ ॐ विष्णु ज्ये २॥ ॐ वाहि ज्ये २॥ ॐ धूम्रि
ज्ये २॥ ॐ दमा ये २॥ नृत्त कला सूर्य स्य नृत्त कला वृत्त वृत्ता ॥ ॥
अथ साम कला पूजय ॥ ॐ नृत्त कला अग्नि ज्ये २॥ ॐ सानदा ये २॥

नाम
३

४
व.पू

ॐ पूजा ये २॥ ॐ दुष्टा ये २॥ ॐ पूषा ये २॥ ॐ नृत्त ज्ये २॥ ॐ धूम्र ज्ये २॥ ॐ मजि ज्ये
नमः ॥ ॐ चंद्रिका ये २॥ ॐ कामदा ये २॥ ॐ कात्ता ये २॥ ॐ ग्रा ये २॥ ॐ
ज्ये २॥ ॐ अंगदा ये २॥ ॐ पूषा ज्ये २॥ ॐ पूषा ज्ये २॥ नृत्त क
ला साम स्य नृत्त कला वृत्त वृत्ता ॥ ॥ गंध पूषा वृत्तः संप्रवाह ॥ धूम्र
विमल पदार्थ ॥ नृत्त कला कला आप विगीर्ण मनु विवा नृत्त कला वृत्त ॥
नृत्त कला मर्थ च जल मर्थ यथा मर्थ विजय कदा वना ये नृत्त कला कदा
विमल च य २ विमल चिका ये स्वाहा ॥ नृत्त कला मर्थ मनुः ॥ ॥ नृत्त कला

नाम
४

५१ नवमं श्रुत्वा नमस्तुभ्यं ३३ वलां च. मीरं दम मावत्य आवा हन नमो ह्य
 व. प य ७॥ पूष्पी जलिन्द्या न॥ तदन न न रं द्य र सु कं पठित यं॥ ७॥ द्य र सु ल
 स्थिता व ज्ञा द्य र म ध्य वे मा धवः॥ द्य र क ल्पु ती ल क ल्पु द्य र म
 सर्व देवताः॥ द्य र वा सु र्ग यः सर्व सर्व ती र्थ च य द न॥ द्य र क र्ग र्ग र्ग
 ताः सर्व द्य र य सा ध कः स्य म मा स म्पू र्ण म ध ना स्य ता॥ श्री गणेशाय नमः
 कृत्वा॥ तदा स्य ता सु ता र्वी क न्प रू प धा नि ली॥ अथ द द ग उजा
 र्वी॥ आन का य त ला च नी॥ शि त य ना दी र्घ ग न्वं गी॥ का ला गि स

५२ दम पमा॥ म दि र्ग व र्ग यि त्वा थ द न ना द न ही स म्प्रा ण म्पू र्ण क्षी न व
 व. प ल्पु र्ण व रू नू पि प ना प ना॥ ७॥ ग र्ग य स्य ताः सर्व देवता ह यं क नी
 ॥ आस ता सा उ मा र्वी या म दः स म ह र्ग र्ग र्ग॥ यो व र्गुः स र व द्वा
 या मं धि स र्ग ना र्ग र्ग॥ सा द व र्ग स्थि ता सा मः ग र्ग देवा द्वा ना स
 नः॥ ७॥ आ या म न्म र्ग देवा ती र्ग या किल ले र वः॥ द न गं ग स मा
 प्रा ति द्य र स्थः सा फ सा ग ना॥ अथ र्ग क न सा न न्द क ले प र स र्ग ना म
 ल न॥ स र्ग न्दः स र्ग न्म मं गी गि द र्ग क ले र पि ली॥ अं र्ग स्थ म म

७ नाकाः शूद्रका गक गजना। अस्तनन्वनि (ध) द्वापिन वस्तुना किन्ने
 व. प. नृपिणी। त्वदुपि (ल्लो) कक श्च दं. नन्व स्य ग न्व नृपिणी। त्वत्वा प ना
 म नाका ना. मा चि गं म् नृ न लं कृ त्। इत्यन्वी ग कि नृ जा हि. गुं लो
 क्क स्य सदा प्रियम्। अने वि गु प नि न्य छ सा ध. कः सिद्धि मा स्यि यः।
 वे ज्ञा ग्मुख्यु संत न. अ (ग) य न स सं यु ग म। आपूर्णं गत पाठ पीय
 वन सं सं व ह ७॥ न्नि द्य र म् कं प ठ नं. पू य च न्दे न धू जा दि तिः पू ज य ७
 ७॥ वि धा ॥ ७॥ अथ यं शा हि स क म् ॥ अ (ग) द क र गं स म्प क. पू य यि

८ न्या गध पू य्या द ता सं पू ज ॥ क ल ग म्प म्प ख वि क्रः क (ल) न ड स मा
 व. प. श्रि नाः ॥ मूलो ग (रु) स्थि ता व ज्ञा म ध्मा मा नृ ग ल्याः स्म ताः ॥ कृ द्वा
 तु सा ग नाः सर्व. स फ दी पा व स न्ध ना ॥ म (ग) य द थ य र्थ दः सा म
 व दं छ थ र्थ ल्यः ॥ अ (ग) मे म्प स रि ताः सर्व. क ल ग म्प स मा श्रि नाः ॥ अ (रु)
 म य (ग) सा वि स न स्व ती ग्म कि दु धि क नी त थ ॥ अ (ग) या नु दे व र्था
 र्थ. दू रि तः दू य का न कं। ग (अ) च य म्प न चे व. ग्म (ग) व नी स न स्व ती न मा न
 म्प द सि धू का व नि. ग ल म्पे स रि ती कृ त्। सर्व स म्प दः स रि ता. गी

२ धनि जल दान वन ॥ अंकुश मृदा दंष्ट्रि ॥ स्व दक्षिण ग. रि कोल
व. प. खंडाल. दृक् चतुर्गुण मूलं कल्या. मत्स्य मृदा मालिखि मं. ग म्मा पवि
आ धनं प्रणि स्थानं गंध पूषा कृणा दितिः संपूष. धन या नि
मृदा दंष्ट्रि ॥ गंध चंद्रा कंदे वलं कात्रं नाधि देवता पृष्ठ प्रजा पात
कृ. ज. युगं ग मृग स्वती ॥ उला कृ या ति गी धनि वा मृद वरुण नाह
यो धी वनि सति विप्र दान म्मा कृत्वं प्र पूजय ॥ स्व पू ग सा ग म्मा
लो. विप्र ना विधुतः कन मि मिता हें व द वे श्य. पा च ज न न म्मा मु ता ह.

१० गगनो धन मृद वादि मालि ना मि ति प. ०७ ॥ तव ता द न जी म्मा. वृत्तै ह
म. क. नि म्मा ता म्मा. गंध ना द स्व या जी लुः पा च ज न न म्मा मु ता ह. गनि न्म
पि म्मा स्व स्म. म्मा गनि पि किं पू नः. विल यं या नि पा पा नि. हि न व द्वा स्म
ना द य. न स्वा गंध व क न म्मा द्वा. मे उ न हि मु वे प्र वे. य स्म पा य नि
गम वि दं. ग म्मा पू ल्प म न क क म्मा. य म्मा क. ग म्मा द्वा ली ग्म. शि म्मा
य च म्मा द्वा. ल लो क लु या न द्वा. ना व स्म ह न्म नः स द्वा. वी ज म्मा
प्र दंष्ट्रि ॥ गंध ना द क न पृ जा प क न ली आ न न हें द्वा द्वा. प १०

१ अक्षरं कृत्वा तद्वापि जिह्वादकं नातिरिच्यते ॥

[illegible][illegible]

१३
व. पृ

दुपति आधा न स प्रति स्थाय मूल मं तुल्य ज पित्वा य उ ग ना त्य र्च
॥ ॐ अर्ध पात्रा से ना य २ ॥ नि आ धा न स्था पति पूर्व्यां ज निंद या न
॥ आ धा न स्था पि र्मा धि नं धू पि नं अर्ध प्र त्वं पा त्र स्थ प य न ॥
ॐ ३ वं प्र वि प्र स ह ग व न श दा मि व ड्री क लु का ला गि तू ड र ने व
सिद्ध वि ना य क से नि धा अ सि न्धा उ च्छू न २ पा त्र प वि र्गं कू न २
स्था ता ॥ नि मं तुल्य प त्र स्था पति पूर्व्यां ज निंद या तू ॥ पा त्र
स म त्वं कृ त्वा अ मृ ल ग्ना ध य ॥ क व च मं तुल्य व ग १ ५ ॥

नाम
१३

१४
व. पृ

मु त्र मं तुल्य व त्वा क य ॥ ह द म मं तुल्य प त्र य ॥ ॐ हं स अ मृ
ने च्छू न र वा य वी य टा ॥ नि मं तुल्य च द न ने ल प य ॥ अ
नि मं तुल्य य द म क लो म ने द माः पा त्र स ना य २ ॥ ॐ धृ या
चि द्या दि क म वा ह नां त अ र्ण द म क लो पू ज य त्पू र्व व ॥ अ
नि मं तुल्य म धा स्थ १ व द्वा द म क लो प्र द ॥ नु मा सिः स हि तां न
कां कू या द्वा न ना म म ॥ आ धा न स्था पति पा त्रं कृ त्वा ॥ पा त्र
म धा न वि मं तुल्य ना त्य र्च ना पि न्धा दि १२ पू र्व व स्तु ज प त्वा ॥

नाम
१४

